कुण्डलिया
गिरिधरराय

श्रीः

कुण्डलिया गिरिधरराय ।

लेखक

गिरिधरराय

लखनऊ

केसरीदास सेठ द्वारा

नवलकिशोर प्रेस में छपकर प्रकाशित

तीसरी बार

सन् १९२२ ई०

कुण्डलिया

❀ गिरिधररायकृत ❀

जियबो मरिबो वे उनै यह नाहिं अपने हाथ।
जानत हैं वे नंदसुत बिहँसत बछरुन साथ॥
बिहँसत बछरुन साथ चारियुग के रखवारे।
इन्द्रमान जिन हस्यो बिपति के काटन हारे॥
कह गिरिधर कबिराय ज्वाब शाहन से कीबो।
आछत सीताराम उमिरि अपनी भरि जीबो॥

पुत्र प्राणते अधिक है चारिउ युग परिमान।
सो दशरथ नृप परिहरेउ बचन न दीन्हों जान॥
बचन न दीन्हों जान बड़ेनकी बूझि बड़ाई।
बात रहै सो काज और बरु सरबस जाई॥
कह गिरिधर कबिराय भये नृप दशरथ ऐसे।
पुत्र प्राण परिहरे बचन परिहरे न ऐसे॥

२ साईं बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज ।
हिरणाकश्यप कंस को गयउ दुहुँन को राज ॥
गयउ दुहुँन को राज बाप बेटा में बिगरी ।
दुश्मन दावागीर हँसै बहु मण्डल नगरी ॥
कह गिरिधर कविराय युगन याही चलिआई ।
पिता पुत्र के बैर नफा कहु कौने पाई ॥

३ बेटा बिगरो बापसों करि तिरियन को नेहु ।
लटापटी होने लगी मोहिं जुदा करि देहु ॥
मोहिं जुदा करि देहु घरीमा माया मेरी ।
लेहौं घर अरु बार करौं मैं फजिहत तेरी ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो गदहा के लेटा ।
समय पर्यो है आय बाप से झगरत बेटा ॥

४ रही न रानी केकयी अमर भई यह बात ।
कवन पुरबुले पाप ते बन पठयो जगतात ॥
बन पठयो जगतात कन्त सुरलोक सिधारेउ ।
जेहिसुत काजे मरेउ राउ नहिं बदन निहारेउ ॥

कह गिरिधर कबिराय भई यह अकथ कहानी ।
यश अपयश रहिगयउ रही नहिं केकयि रानी ॥

५ साईं ऐसे पुत्र से बांझ रहै बरु नारि ।
बिगरी बेटे बाप से जाय रहै ससुरारि ॥
जाय रहै ससुरारि नारिके नाम बिकाने ।
कुलके धर्म नशाय और परिवार नशाने ॥
कह गिरिधर कबिराय मातु झक्खै वहि ठाईं ।
असि पुत्रिनि नहिं होय बांझ रहतिउँ बरु साईं ॥

६ नारी अतिबल होत है अपने कुल को नाश ।
कौरव पाण्डव बंशको किया द्रौपदी नाश ॥
किया द्रौपदी नाश केकयी दशरथ मारेउ ।
राम लषण से पुत्र तेऊ बनबास सिधारेउ ॥
कह गिरिधर कबिराय सदा नर रहै दुखारी ।
सो घर सत्यानाश जहां है अतिबल नारी ॥

७ मक्करवाली नारि को मारा ना मिमिआइ ।
सरिता बोलै मोरसों जियत भुवङ्ग खाइ ॥

२ साईं बेटा बाप के बिगरे भयो अकाज ।
हिरणाकश्यप कंस को गयउ दुहुँन को राज ॥
गयउ दुहुँन को राज बाप बेटा में बिगरी ।
दुश्मन दावागीर हँसै बहु मण्डल नगरी ॥
कह गिरिधर कविराय युगन याही चलिआई ।
पिता पुत्र के बैर नफा कहु कौने पाई ॥
३ बेटा बिगरो बापसों करि तिरियन को नेहु ।
लटापटी होने लगी मोहिं जुदा करि देहु ॥
मोहिं जुदा करि देहु घरीमा माया मेरी ।
लेहौं घर अरु बार करौं मैं फजिहत तेरी ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो गदहा के लेटा ।
समय पर्यो है आय बाप से झगरत बेटा ॥
४ रही न रानी केकयी अमर भई यह बात ।
कवन पुरबुले पाप ते बन पठयो जगतात ॥
बन पठयो जगतात कन्त सुरलोक सिधारेउ ।
जेहिसुत काजे मरेउ राउ नहिं बदन निहारेउ ॥

कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी ।
यश अपयश रहिगयउ रही नहिं केकयि रानी ॥
५ साईं ऐसे पुत्र से बांझ रहै वरु नारि ।
बिगरी बेटे बाप से जाय रहै ससुरारि ॥
जाय रहै ससुरारि नारिके नाम बिकाने ।
कुलके धर्म नशाय और परिवार नशाने ॥
कह गिरिधर कविराय मातु झक्खै वहि ठाईं ।
असि पुत्रिनि नहिं होय बांझ रहतिउँ वरु साईं ॥
६ नारी अतिबल होत है अपने कुल को नाश ।
कौरव पाण्डव बंशको कियो द्रौपदी नाश ॥
कियो द्रौपदी नाश केकयी दशरथ मारेउ ।
राम लषण से पुत्र तेऊ बनबास सिधारेउ ॥
कह गिरिधर कविराय सदा नर रहै दुखारी ।
सो घर सत्यानाश जहां है अतिबल नारी ॥
७ मक्करवाली नारि को मारा ना मिमिआइ ।
सरिता बोलै मोरसों जियत भुवङ्ग खाइ ॥

जियत भुवङ्ग खाइ मुनिन के जिय तरसावै ।
कौतुक अपना करै कुँवरिके अङ्क लगावै ॥
कह गिरिधर कबिराय जैस खाँड़े की धारा ।
देखै हृदय बिचारि नारि यह बड़ी मकारा ॥

८ नारी परघर जाइ अरे यह भला न मानै ।
जो घर रहै निदान चाल भाषा पहिंचानै ॥
भाषा चाल पहिंचानि बहुरि उतपात न होई ।
जो कुछ लागै दोष अरे सुन आवै रोई ॥
कह गिरिधर कबिराय समय पर देत है बारी ।
मरा पुरुष जियजान जबै परघर गइ नारी ॥

९ काची रोटी कुचकुची परती माछी बार ।
फूहर वही सराहिये परसत टपकै लार ॥
परसत टपकै लार झपटि लरिका सौंचावै ।
चूतर पोंछै हाथ दोऊ कर शिर खजुवावै ॥
कह गिरिधर कबिराय फूहर के याही धैना ।
कजरौटा नहिं होइ लुकाठै आंजै नैना ॥

१० चिन्ता ज्वाल शरीरकी दाह लगै न बुझाय ।
प्रकट धुवाँ नहिं देखिये उरअन्तर धुँधुवाय ॥
उर अन्तर धुँधुवाय जरै जस कांच की भट्टी ।
रक्त मांस जरिजाइ रहै पांजरिकी ठट्टी ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनौरे मेरे मिन्ता ।
वे नर कैसे जियें जाहि व्यापी है चिन्ता ॥

११ साईं पुर ज्वाला उठो आसमानको धाय ।
अन्धहि पंगुहि छोड़िकै पुरजन चले पराय ॥
पुरजन चले पराय अन्ध यक मंत्र बिचारो ।
पंगुहि लीन्हे कन्ध डीठ वाके पगुधारो ॥
कह गिरिधर कबिराय सुमति ऐसी चलिआई ।
बिना सुमति को रंक पंक रावण से साईं ॥

१२ सुवा एक दाड़िमके धोखे गयो नारियर खान ।
कछुखायो कछुखान न पायो फिर लागो पछितान॥
फिर लागो पछितान बुद्धि अपनी को रोवा ।
निर्गुणियन के साथ गुणिन अपने गुण खोवा ॥

कह गिरिधर कबिराय सुनो हो मेरे नोखे ।
गयो फटकही टूटि चोंच दाड़िमके धोखे ॥

सोरठा ॥

१३ शुकने कह्यो सँदेश सेमरके पग लागिहौं ।
पग न परै वहि देश जब सुधि आवै फलनकी ॥

कुण्डलिया ॥

१४ भूलो चातक आइ कै घटा धुवांको देखि ।
हौं जानी जस जलजहै बादर श्याम बिशेखि ॥
बादर श्याम बिशेखि देखि तो ताको धायो ।
एक समय संकटपरे कौन काके घर आयो ॥
कह गिरिधर कबिराय धुवांको यह फल पायो ।
जो जलको तू गयो सोइ नयनन जल आयो ॥

१५ साईं बैर न कीजिये गुरु पण्डित कबि यार ।
बेटा बनिता पँवरिया यज्ञ करावनहार ॥
यज्ञ करावनहार राजमंत्री जो होई ।
बिप्र परोसी बैद्य आपको तपै रसोई ॥

कह गिरिधर कबिराय युगनते यह चलि आई ।
इन तेरहसों तरह दिये बनिआवै सांई ॥
१६ बैरी बँधुआ बानियां ज्वारी चोर लबार ।
बटपारी रोगी ऋणी नगरनारिको यार ॥
नगरनारिको यार भूलि परतीति न कीजै ।
सौ सौगन्दै खाइ चित्त में एक न दीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय धरै आवै अनगैरी ।
मुँहसे कहै बनाय चित्त में पूरो बैरी ॥
१७ बनियां अपने बापको ठगत न लावै बार ।
निशि बासर जननी ठगै जहां लेत अवतार ॥
जहां लेत अवतार मासदश उदर में राखै ।
गुरु से करै बिबाद आप पण्डित ह्वै भाखै ॥
कह गिरिधर कबिराय व्यचै हरदी औ धनियां ।
मित्र जानि ठगिलेहि जहांलग भक्ता बनियां ॥
१८ आटामें आटा घटै घटै दाल में दार ।
कबहुँक घटि है घीवमहँ तौ हमसे ह्वैहै रार ॥

हमसे ह्वै है रार मारि जूतिन जी लेहौं ।
जानै सकल जहान दाम एकौ ना देहौं ॥
कह गिरिधर कबिराय बैठिहौं तुम्हरे घाटा ।
पन्हिन मूड़ ठठैहौं जो कबहुँक घटिहै आटा ॥

१६ झूठे मीठे बचन कहि ऋण उधार लैजाय ।
लेत परमसुख ऊपजै लैकै दियो न जाय ॥
लैकै दियो न जाय ऊंच अरु नीच बतावै ।
ऋण उधारकै रीति मांगते मारन धावै ॥
कह गिरिधर कबिराय जानिरहै मनमें रूठा ।
बहुत दिना ह्वैजाय कहै तेरो काग़ज़ झूठा ॥

२० सोना लादन पिव गये सूना करि गये देश ।
सोना मिले न पिव मिले रूपा ह्वैगे केश ॥
रूपा ह्वैगे केश रोय रँग रूप गवाँवा ।
सेजन को बिश्राम पिया बिन कबहुँ न पावा ॥
कह गिरिधर कबिराय लोन बिन सबै अलोना ।
बहुरि पिया घर आव कहा करिहौं लै सोना ॥

२१ मोती लादन पिव गये धुरपटना गुजरात ।
मोती मिले न पिव मिले युग भरि बीती रात ॥
युग भरि बीती रात बिरहिनी आनि सतावै ।
चौंकि परी ब्रजनारि पियाको लिखा न आवै ॥
कह गिरिधर कबिराय हमैं ज्यों कृष्ण औ गोपी ।
आगि लगै वह देश जहां उपजत है मोती ॥

२२ जाकी धन धरती हरी ताहि न लीजै संग ।
जो चाहै लेतो बनै तो करि डारु निपंग ॥
तो करि डारु निपंग भूलि परतीति न कीजै ।
सौ सौगन्दै खाय चित्त में एक न दीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय कबहुँ बिश्वास न वाको ।
शत्रुसमान परिहरिय हरिय धन धरती जाको ॥

२३ साईं सत्य न जानिये खेलि शत्रुसँग सार ।
दांवपरे नहिं चूकिये तुरत डारिये मार ॥
तुरत डारिये मार नरद कच्ची करिदीजै ।
कच्ची होय तो होय मारि जग में यश लीजै ॥

कह गिरिधर कबिराय युगन याही चलि आई ।
कितनो मिलै घधाय शत्रु को मारिय सांई ॥
२४ नदी न छोड़िये तीरसो जो बरषा सरसाय ।
बाढ़ि बाढ़ि दिन चारिको अपयश जन्म नशाय ॥
अपयश जन्म नशाय वही पाहन की रेखा ।
बड़ी बड़ाई लहत सदा हम कबहुँ न देखा ॥
कह गिरिधर कबिराय नेक नेकी नहिं छोड़ा ।
बदी किये का होय नदीको तीर न छोड़ा ॥
२५ दौलत पाइ न कीजिये सपने में अभिमान ।
चञ्चल जल दिन चारिको ठाउँ न रहत निदान ॥
ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै ।
मीठे बचन सुनाय बिनय सबही की कीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय अरे यह सब घट तौलत ।
पाहुन निशिदिन चारि रहत सबही के दौलत ॥
६ गुण के गाहक सहस नर बिनु गुण लहै न कोय ।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय ॥

शब्द सुनै सबकोय कोकिला सबै सुहावन ।
दोऊको यक रङ्ग काग सब भये अपावन ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो हो ठाकुर मनके ।
बिनु गुण लहै न कोइ सहस नर गाहक गुणके ॥

२७ मित्रबिछोहा अति कठिन मति दीजै करतार ।
वाके गुण जब चित चढ़ै बर्षत नयन अपार ॥
बर्षत नयन अपार मेघ सावन झरिलाई ।
अब बिछुरे कब मिलौ कहौ कैसी बनिआई ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो हो बिनती एहा ।
हे करतार दयालु देहु जनि मित्रबिछोहा ॥

२८ साईं तहां न जाइये जहां न आप सो धाय ।
बरन बिषै जाने नहीं गदहा दाखे खाय ॥
गदहा दाखे खाय गऊपर दृष्टि लगावै ।
सभा बैठि मुसक्याय यही सब नृपको भावै ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनोरे मेरे भाईं ।
तहां न करिये बास तहां उठि आइय सांईं ॥

२९ गया पिण्ड जो देइ पितर को अपने तारै ।
करज बाप कर देइ लटे परिवार सँभारै ॥
हरी भूमि गहि लेइ द्रवन शिर खड्ग बजावै ।
पर उपकारज करै पुरुष में शोभा पावै ॥
सोई वंश सराहिये तल बैरी सब दलमलै ।
यतनो काम जो ना करै तो पुत्र खेह कन्या भलै ॥
३० सिंहिनि सिखवत सिंह कहँ पियबेड़ा परै सँभार ।
जेहि हाथे गोपर हन्यो तेहि मेढ़क जनि मार ॥
तेहि मेढ़क जनि मार कुलहि जनि दोष लगावै ।
बरु फाका करि मरै जगत में शोभा पावै ॥
कह गिरिधर कबिराय हँसै जम्बुक औ डिंगिनि ।
समय परे की बात सिंह का सिखवै सिंहिनि ॥
३१ हिरना बिरझेउ सिंहसे औझरु खुरी चलाय ।
झारखण्ड झीना परयो सिंहा चले पराय ॥
सिंहा चले पराय समय समरत्थ बिचारी ।
कलिहि कालमा लाइ हँसे हँसिकै पग धारी ॥

कह गिरिधर कविराय सुनो हो मेरे अरना ।
आजु गई करिजाय सकारे मैं की हिरना ॥

३२ बगुला झपट्यो बाजपर बाज रह्यउ शिरनाय ।
दै अंधियारी पगबँध्यो चेटक दै फहराय ॥
चेटक दै फहराय धनी बिनु कौन चलावै ।
डरै सांकरी डार करै जो जो मन भावै ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो पश्चिम के नकुला ।
समय पलाटे आय बाजपर झपटत बगुला ॥

३३ फुदकी फुदकत बाज पर बाज रहत है लाज ।
बहुत दिनन मैं गम करी त्वहिं मारत हौं आज ॥
त्वहिं मारत हौं आज बाज टरि जाउ यहां से ।
जब मैं करिहौं कोप तबै तुम बचो कहां से ॥
कह गिरिधर कविराय बाजपर उलरै धुधकी ।
समय परे की बात बाज कहँ घिरवै फुदकी ॥

३४ पाता बड़ बड़ देखिकै चढ़े कुमराठो धाय ।
तरुवर होय तौ भारसह टूटे रँड़ अरराय ॥

टूटे रँड़ अरराय जाय अन्तहिं है फूली ।
बतियां गईं लोभाय कहां धौं मारग भूली ॥
कह गिरिधर कबिराय यहै नीचन की बाता ।
अब न जाउ वहि ठाउँ देखिकै बड़े बड़े पाता ॥

२५ साईं सब संसार में मतलब का व्यवहार ।
जबलग पैसा गांठ में तब लग ताको यार ॥
तब लग ताको यार संगही सँग में डोलै ।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहिं बोलै ॥
कह गिरिधर कबिराय जगत यहि लेखा भाई ।
बिन बेगरजी प्रीति यार बिरला कोइ सांई ॥

२६ दादुर केर दरेर पर लै फणपति निज शीश ।
समय आपनो जानिकै मनहिं न लायो ईश ॥
मनहिं न लायो ईश शीश पर झोल्यो भाई ।
पर्यो आपदा आय लाज पति सबै गँवाई ॥
कह गिरिधर कबिराय कहां लै आनो आदर ।
गुण कीरति घटिगई शीशपर बोले दादुर ॥

३७ केंचुवा कहै नागिन से सुनो न हेतु अचार ।
हम तुम से अस रीति है लाख भांति व्यवहार ॥
लाख भांति व्यवहार व्याह सावन में कीजै ।
आर चैत को घाम कटक दल हमरो छीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय कहां से आये हेतुवा ।
शेषनाग मरिजाय नागिनिहि व्याहै केंचुवा ॥
३८ कोई भँवर गुलाब तजि गये जो हुरहुर पास ।
धरिक समान असारहै करकस आई बास ॥
करकस आई बास आके पासहु से भागे ।
अपने मन पछिताय फेर वाही सँग लागे ॥
कह गिरिधर कबिराय कुमति अस फजिहत होई ।
जोइ बड़ेन की छोड़ि नीच घर आवै सोई ॥
३९ भँवर भटैया जाहु जनि कांट बहुत रस थोर ।
आश न पूजै बासरा तासों प्रीति न जोर ॥
तासों प्रीति न जोर तोर कुल कमल सँघाती ।
पपिहा रटै पियास बुंद जल आवै स्वाती ॥

कह गिरिधर कबिराय बैठु परमल की छैयां ।
बरु मरु जिय तरसाय जाहु जनि भँवर भटैया ॥

दोहा ॥

४०. भौंरा ये दिन कठिन हैं दुख सुख सहो शरीर ।
जब लग फूलै केतकी तबलग बैठु करीर ॥

कुण्डलिया ॥

४१ हीरा अपनी खानि को बार बार पछिताय ।
गुण कीमत जानै नहीं तहां बिकानो आय ॥
तहां बिकानो आय छेद करि कटि में बांध्यो ।
बिन हरदी बिन लोन मांस ज्यों फूहर रांध्यो ॥
कह गिरिधर कबिराय कहांलगि धरिये धीरा ।
गुण कीमत घटिगई यहै कहि रोयो हीरा ॥
४२ रहिये लटपट काटि दिन बरु घामें मा सोय ।
छांह न वाकी बैठिये जो तरु पतरो होय ॥
जो तरु पतरो होय एक दिन धोखा दैहै ।
जादिन बहै बयारि टूटि तब जरसे जैहै ॥

कह गिरिधर कबिराय छांह मोटे की गहिये।
पाता सों झरि जाय तऊ छाहैं भा रहिये॥

३ पीवै नीर न सरवरो बूंद स्वाति की आस।
केहरि तृण नाहिं चरि सकै जो ब्रत करै पचास॥
जो ब्रत करै पचास बिपुल गज यूथ बिदारै।
सुपुरुष तजै न धीर जीव बरु कोऊ मारै॥
कह गिरिधर कबिराय जीव जोधक मरि जीवै।
चातक बरु मरिजाय नीर सरवर नहिं पीवै॥

४ हंसा हियँ रहिये नहीं सरवर गये सुखाय।
कालिह हमारी पीठ पै बगुला धरि हैं पांय॥
बगुला धरि हैं पांय इहां आदर नहिं ह्वैहै।
जगत हँसाई होय बहुरि मनमें पछितैहै॥
कह गिरिधर कबिराय दिनौदिन बाढ़ै संसा।
याहूसे घटि जाय तबै का करिहैं हंसा॥

५ हंसा उड़ि दिशि कहँ चले सरवर मीत जुहार।
हम तुम कबहूं भेंटिहैं संदेशन व्यवहार॥

संदेशन व्यवहार सदा जल पूरण रहियो ।
सुख सम्पति धन राज्य सदा चिरजीवत रहियो ॥
कह गिरिधर कविराय केलिकी रही न मंसा ।
दै अशीश उड़ि चले देश अपने को हंसा ॥

४६ सैयां भये तिलंगवा बौहर चली नहाय ।
देखि डरी कप्तान कहँ कौन जनारो आय ॥
कौन जनारो आय काह दहुँ पहिरे बाटे ।
बिन गुनाह तकसीर सैयां को ठाढ़े डाटे ॥
कह गिरिधर कविराय नवै जस बन्दर मछा ।
तोसदान बन्दूक हाथ में पत्थरकल्ला ॥

४७ साईं जगमें योगकरि युक्ति न जानै कोय ।
जब नारी गवने चली चढ़ी पालकी रोय ॥
चढ़ी पालकी रोय जान नहिं कोई जीकी ।
रही सुरति तन छाय सुछतिया अपने हियकी ॥
कह गिरिधर कविराय अरे जनि होहु अनारी ।
मुँहसे कहै बनाय पेट में सिनवै नारी ॥

दोहा ॥

८ नवलनारि रोवै नहीं कहै पुकारि पुकारि ।
जस पिय तुम हमसन करी वैसे करब प्रचारि ॥

कुण्डलिया ॥

९ गढ़पतियन को धर्म है कि करै दुउन को ध्यान ।
जिमीदोज रैनी करै मनका राखो जान ॥
मनका राखो जान किले पर तोप चढ़ावो ।
कोस कोस को गिरद काटि मैदान करावो ॥
कह गिरिधर कबिराय राजराजन के सांई ।
अस गढ़पति जो होइ ताहि को जंग नसाई ॥

१० नारा कहै नदीनसन हम तुम एक समान ।
हमहीं तुमसन अधिकहैं अधिक हमारो मान ॥
अधिक हमारो मान ताहि तब बरषा आये ।
बरसे नीर झराझर मनइ उबार न पाये ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनोहो भाई पारा ।
समय परे की बात नदी कहँ सिखवै नारा ॥

५१ चुगुल न चूकै कबहुँ को अरु चूकै सब कोइ ।
बरकन्दाज कमानियां चूक उनहुँ से होइ ॥
चूक उनहुँसे होइ जे बांधैं बरछी गुल्ला ।
चूक उनहुँसे होइ पढ़ैं पण्डित औ मुल्ला ॥
कह गिरिधर कबिराय कलाहूते नट चूकै ।
चुगुल चौकसीदार ससुर कबहूं नहिं चूकै ॥

५२ मूसा कहै बिलार सों सुनरे झूठझुठैल ।
हम निकसत हैं सैर को तुम बैठत हौ गैल ॥
तुम बैठत हौ गैल कच्चारि धक्कन सों जैहौ ।
तुम हौ निपट गरीब कहा घर बैठे खैहौ ॥
कह गिरिधर कबिराय बात सुनियो हो हूसा ।
बाउ दिननका फेर बिलारिहि सिखवै मूसा ॥

५३ कौवा कहै मरालसे कहा जाति कह गोत ।
तुम ऐसे बदरूपिया कहीं न जग में होत ॥
कहीं न जग में होत महामैली मलखाना ।
बैठि कचेहरी जाय बेद मरयाद न जाना ॥

कह गिरिधर कबिराय सुनो हो पंछी हौवा ।
धन्य मुल्क यह देश जहां के राजा कौवा ॥
५४ माकरि गिरगिट से कहै का मारति हौ सान ।
जो तुम्हरे हिरदैन महँ सो हमहूं अब जान ॥
सो हमहूं अब जान करब हम धनके जाला ।
जहां न तुम्हरी डीठि तहां अब हमरी जाला ॥
कह गिरिधर कबिराय बात सुनियो हो धाकर ।
लगै चपेटा मोर तहां नाहिं तहँवा माकर ॥
५५ नयना लगन अपार है पटा अपट है जाय ।
गुन गरुवातम शीलता धीरज धर्म नशाय ॥
धीरज धर्म नशाय फेर वाही सँग छूटै ।
छिनक बुद्धि होयजाय फेर वाही सँग जूटै ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो हो मोरे भयना ।
कठिन प्रीति की रीति जहां लागे दुइ नयना ॥
५६ नयना की नोकैं बुरी निकस जात जस तीर ।
हेरे घाव न पाइये बेधा सकल शरीर ॥

वेधा सकल शरीर बैद का करै बैदाई ।
करिहौ कोटि उपाय घाउ नहिं देत दिखाई ॥
कह गिरिधर कविराय बिरहिनी देतहै चोकैं ।
समुझि बूझिकै चलो बुरी नयनन की नोकैं ॥

५७ प्रीति कीजिये बड़ेन सों समया लावै पार ।
कायर क्रूर कुपूत हैं बोरि देत मँझधार ॥
बोरि देत मँझधार प्रीति की कवन बड़ाई ।
पछिताने फिरि देहिं जगत में अपयश पाई ॥
कह गिरिधर कविराय प्रीति सांची सिखलीजै ।
व्यवहारी जो होय तऊ तन मन धन दीजै ॥

५८ साईं घोड़े आछतहि गदहन आयो राज ।
कौवा लीजै हाथ में दूरि कीजिये बाज ॥
दूरि कीजिये बाज राज पुनि ऐसो आयो ।
सिंह कीजिये कैद स्यार गजराज चढ़ायो ॥
कह गिरिधर कविराय जहां यह बूझि बड़ाई ।
तहां न कीजै भोर सांझ उठि चलिये साईं ॥

५९ साईं अवसर के पड़े को न सहै दुखद्वन्द
जाय बिकाने डोमघर वै राजा हरिचन्द ।
वै राजा हरिचन्द करैं मरघट रखवारी
करे तपस्वी वेष फिरे अर्जुन बलधारी ।
कह गिरिधर कबिराय तपै वह भीम रसोईं
को न करे घटि काम परे अवसर के साईं ।

६० कुसमय चले बिदेशकहँ काची लादि कुम्हार
बरषा ऋतु बैरिनि भई बादर कीन्हों मार ।
बादर कीन्हों मार इतै उत कछु नाहिं सूझै
भरिगईं ताल तलैया नदी औ समुद्र को बूझै ।
कह गिरिधर कबिराय चले पहुँचे दिनदशमा
चला करम लै बांधि चलै का अपनी बशमा ।

६१ पपिहा त्वहिंका मारिहौं छोड़ देहु मोर गाँव
अर्द्धरात का बोलते लै लै पिउ को नाँव ।
लै लै पिउको नाँव ठाँव हमरो नाहिं छोड़ै
कठिन तुम्हारो बोल जाइ हिरदे में शूलै ।

कह गिरिधर कबिराय सुनो हो निर्दय पपिहा ।
नेक रहनदे मोहिं चोंच मूंदेरहु घटिहा ॥
६२ क्यारी करै कपूर की मृगमद बरहा बन्ध ।
सींचै नीर गुलाब से लहसुन तजै न गन्ध ॥
लहसुन तजै न गन्ध रुद्र अगरहु संयूता ।
कबहुँ अहै गजराज कबहुँ शूकर के पूता ॥
कह गिरिधर कबिराय बेद भाखै यह सारी ।
बीज बयो सो होय कहा करै उत्तम क्यारी ॥
६३ लंका पति तुमसे गई ज्यों बसन्त द्रुमपात ।
सुमति बिभीषण जब दई तब तुम मारी लात ॥
तब तुम मारी लात भागि तबहींते आयउ ।
मिल्यो रामदल जाइ काजधों केतिक सारयउ ॥
कह गिरिधर कबिराय रामजिय बाढ़ी शंका ।
तपै बिभीषण राज अरे पति छूटी लंका ॥
६४ बड़े बड़ेनकी ऐसिही बड़ेन बड़ाई होय ।
हनूमान जब गिरिधरेउ गिरिधर कहत न कोय ॥

गिरिधर कहत न कोय ताको किनका हरिधरेऊ ।
गिरिधर गिरिधर होय कहत सबको दुख हरेऊ ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो हो ज्ञानी भाई ।
थोरे में यश होय यशी पूरुष को सांई ॥
६५ साईं इन्हैं न बिरोधिये छोट बड़ो सब भाय ।
ऐसे भारी बृक्षको कुल्हरी देत गिराय ॥
कुल्हरी देत गिराय मारके जमीं गिराई ।
टूक टूक कै काटि समुद्र में देत बहाई ॥
कह गिरिधर कबिराय फूट जेहिके घर जाई ।
हरणाकश्यप कंस गये बलि रावण भाई ॥
६६ लाठी में गुण बहुत हैं सदा राखिये संग ।
गहिरी नदि नारा जहां तहां बचावै अंग ॥
तहां बचावै अंग झपटि कुत्ता कहँ मारै ।
दुशमन दावागीर होय तिनहूं को झारै ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो हो धूर के बाठी ।
सब हथियारन छांड़ि हाथ महँ लीजै लाठी ॥

६७ कमरी थोरे दामकी आवै बहुती काम ।
खासा मलमल बाफ़दा उनकर राखै मान ॥
उनकर राखै मान बुन्द जहँ आड़े आवै ।
बकुचा बांधै मोट रात को झार बिछावै ॥
कह गिरिधर कबिराय मिलति है थोरे दमरी ।
सब दिन राखै साथ बड़ी मर्यादा कमरी ॥

६८ जुगनू बोलै सूर्यसों हम बिन जग अँधियार ।
दिनके ठाकुर तुम भये रातके हम कोतवार ॥
रातके हम कोतवार जुगनू अस नाम हमारो ।
तुम अकाश में रहो हमारो पृथ्वी द्वारो ॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो हो भाई जुगनू ।
ऐंड़ि ऐंड़ि बतराहि सूर्य के सन्मुख जुगनू ॥

६९ बिना बिचारे जो करै सो पाछे पछिताय ।
काम बिगारे आपनो जगमें होत हँसाय ॥
जगमें होत हँसाय चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ॥

कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे ॥
७० बीती ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेइ ।
जो बनि आवै सहजमें ताही में चित देइ ॥
ताही में चित देइ बात जोई बनि आवै ।
दुर्जन हँसै न कोइ चित्त में खता न पावै ॥
कह गिरिधर कविराय यहै करु मन परतीती ।
आगे को सुख होइ समुझि बीती सो बीती ॥
७१ साईं अपने चित्तकी भूलि न कहिये कोइ ।
तबलग मनमें राखिये जबलग कारज होइ ॥
जबलग कारज होइ भूलि कबहूँ नहिं कहिये ।
दुर्जन हँसे न कोय आप सियरे ह्वै रहिये ॥
कह गिरिधर कविराय बात चतुरनकी ताईं ।
करतूती कहि देत आप कहिये नहिं साईं ॥
७२ साईं अपने भ्रात को कबहुँ न दीजै त्रास ।
पलक दूर नहिं कीजिये सदा राखिये पास ॥

सदा राखिये पास त्रास कबहूं नहिं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश ताहिकी गति सुनि लीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय रामसों मिलियो जाई ।
पाय बिभीषण राज्य लंकपति बाज्यो सांई ॥

७३ सांई नदी समुद्रको मिली बड़प्पन जानि ।
जाति नाश भयो मिलतही मान महत की हानि ॥
मान महत की हानि कहो अब कैसी कीजै ।
जल खारी ह्वैगयो ताहि कहो कैसे पीजै ॥
कह गिरिधर कबिराय कच्छ औ मच्छ सकुचाई ।
बड़ी फजीहत होय तबौ नादियन की सांई ॥

७४ सांई सन औ दुष्टजन इनको यहै सुभाव ।
खाल खिंचावैं आपनी परबन्धन के दांव ॥
परबन्धन के दांव खाल आपनी खिंचवावैं ।
मूड़ काटिकै फवै तऊ वह बाज न आवैं ॥
कह गिरिधर कबिराय जरैं आपनी कटाई ।
जल में परि सारिगये तऊ छांड़ी न खुटाई ॥

७५ साईं समय न चूकिये यथाशक्ति सन्मान ।
को जानै को आइहै तेरी पौँरि प्रमान ॥
तेरी पौँरि प्रमान समय असमय तकि आवै ।
ताको तू मन खोलि अंकभरि हृदय लगावै ॥
कह गिरिधर कबिराय सबै यामें सुधि आई ।
शीतल जल फल फूल समय जनि चूकौ साईं ॥
७६ साईं ऐसी हरि करी बलि के द्वारे जाय ।
पहिले हाथ पसारिकै बहुरि पसारे पांय ॥
बहुरि पसारे पांय मतो राजाने बतायो ।
भूमि सबै हरि लई बाँधि पाताल पठायो ॥
कह गिरिधर कबिराय राउ राजन के ताईं ।
छल बल करि प्रभु मिले ताहि को तू है साईं ॥
७७ साईं अगर उजारि में जरत महा पछिताय ।
गुणगाहक कोऊ नहीं जाहि सुबास सुहाय ॥
जाहि सुबास सुहाय सूनबन कोऊ नाहीं ।
कै गीदर कै हिरन सुतौ कछु जानत नाहीं ॥

कह गिरिधर कविराय बड़ा दुख यहै गुसाईं ।
अगर आक की राख भई मिलि एकै साईं ॥

७८ साईं हंस न आवहीं बिनु जल सरवर पास ।
निर्जल सरवर ते डरैं पक्षी पथिक उदास ॥
पक्षी पथिक उदास छांह बिश्राम न पावै ।
जहां न प्रफुलित कमल भँवर तहँ भूलि न आवै ॥
कह गिरिधर कविराय जहां यह बूझि बड़ाई ।
तहां न करिये सांझ प्रातही चलिये सांईं ॥

७९ नयना जब परवश भये उत्तम गुण सब जायँ ।
वे फिरि फिरि चोरी करैं ये फिरि फिरि लपटायं ॥
ये फिरि फिरि लपटायँ नेत्र बहुरैं भरि आवैं ।
खानपान तनत्याग रात दिनही दुख पावैं ॥
कह गिरिधर कविराय सुनो तुम श्रवणनि बैना ।
लोग देइँ अकलङ्क परैं जब परवश नैना ॥

८० साईं सुमन पलाश पर सुवा रह्यो जो आय ।
लाल कलीसी चोंचपर मधुकर बैठो जाय ॥
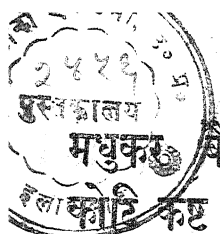
मधुकर बैठो जाय सुवा ततकाल बचायो ।
कोटि कष्ट करि पायँ मारि करि छूटन पायो ॥
कह गिरिधर कविराय बेगि घर बजै बधाई ।
दीजै बिदा पलाश जियत घर जैये साँई ॥

=१ साईं तेली तिलनसों कियो नेह निर्बाहि ।
छाँटि फटक ऊजर करी दई बड़ाई ताहि ॥
दई बड़ाई ताहि पञ्च महँ सिगरेजानी ।
दै कोल्हू में पेरि करी एकत्तर घानी ॥
कह गिरिधर कविराय यही माया प्रभुताई ।
माया सब से भली मानु मत मेरो साँई ॥

=२ साईं सुवा प्रबीन अति बानी बदत बिचित्र ।
रूपवन्त गुण आगरो राम नाम सों चित्त ॥
राम नाम सों चित्त और देवन अनुराग्यो ।
जहां जहां तुव गयो तहां तुव नीको लाग्यो ॥
कह गिरिधर कविराय सुवा चूक्यो चतुराई ।
बृथा कियो बिश्वास सेय सेमर को साँई ॥

८३ गदहा थोरे दिनन में खूद खाइ इतरात ।
अफरान्यो मारन कह्यउ ऐराकी को लात ॥
ऐराकी को लात देत शङ्का नहिं आनै ।
ऐराकी सँग रहै ताहि कोऊ नहिं जानै ॥
कह गिरिधर कबिराय रहैगो तौलौं जबहा ।
ऐराकी की लात सहैगा कैसे गदहा ॥
८४ महुआ नित उठि दाख सों करत मसलहत आय ।
हम तुम रूखे एक से हूजत हैं रस राय ॥
हूजत हैं रस राय बिलग जानि याको मान्यो ।
मधुरमिष्ट हम अधिक कछुक जियसे जनि जान्यो ॥
कह गिरिधर कबिराय कहत साहबसे रहुवा ।
तुम नीचे फल बेलि बृक्ष हम ऊंचे महुवा ॥
८५ गुलतुर्रा सों जायकै वार्ता करत करील ।
हम तुम सूखे एक सों पूँछ देखिये भील ॥
पूँछ देखिये भील भेद जो जानै मेरो ।
तोहूं पूंछ बुलाय भेद जो जानै तेरो ॥

कह गिरिधर कबिराय सुनातरु करिहौ हुर्रा ।
अब जनि भूलि गुमान करो फिरि हौ गुलतुर्रा ॥

८६ हुक्का बांधो फेंट में नै गहि लीन्ही हाथ ।
चले राह में जात हैं लिये तमाकू साथ ॥
लिये तमाकू साथ गैल को धन्धा भूल्यो ।
गइ सब चिन्ता भूलि आगि देखत मन फूल्यो ॥
कह गिरिधर कबिराय जो यम कर आया हुक्का ।
जिय लै गयो जो काल हाथ में रहिगा हुक्का ॥

८७ पगड़ी सूही बांधि के भयो सिपाही लोग ।
घास बेंचिकै खात हैं भयो गांव में रोग ॥
भयो गांव में रोग पूंछ नीबरी देखावहु ।
मन में बड़े हौ छैल राग पनघट पर गावहु ॥
कह गिरिधर कबिराय महीन तुमते है सूही ।
भये सिपाही आनि बांधिकै पगड़ी सूही ॥

८८ पानी बाढ़ो नाव में घर में बाढ़ो दाम ।
दोनों हाथ उलीचिये यही सयानो काम ॥

यही सयानो काम राम को सुमिरण कीजै ।
परस्वारथ के काज शीश आगे धरि दीजै ॥
कह गिरिधर कविराय बड़ेन की याही बानी ।
चलिये चाल सुचाल राखिये अपनो पानी ॥

८९ राजा के दरबार में जैये समया पाय ।
साईं तहां न बैठिये जहँ कोउ देय उठाय ॥
जहँ कोउ देय उठाय बोल अनबोले रहिये ।
हँसिये ना हहराय बात पूछेते कहिये ॥
कह गिरिधर कविराय समय सों कीजै काजा ।
अति आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहै राजा ॥

९० कृतघन कबहुँ न मानहीं कोटि करै जो कोय ।
सर्बस आगे राखिये तऊ न अपनो होय ॥
तऊ न अपनो होय भले की भली न मानै ।
काम काढ़ि चुप रहै फेरि तिहि नहिं पहिंचानै ॥
कह गिरिधर कविराय रहत नितही निर्भय मन ।
मित्र शत्रु ना एक दाम के लालच कृतघन ॥

कवित्त बैताल ॥

१ प्रथम लगन जब लगी तबहि कछु और न सूझै ।
सुध बुध गई हेराय तबहिं सन्मुख ह्वै जूझै ॥
बिरह तेग तलवार सेल अति बज्जर भारी ।
तपत रहै दिन रैनि घाव अन्तस तनकारी ॥
नित मरना नित जीवना सो रैनि पलट यों दीजिये ।
बैताल कहै सुन बिक्रम जो मित्र कहै सो कीजिये ॥

२ अरुण तेज अति रूप बरण उनको है न्यारो ।
तिमिर नाश परकाश जगत को सिरजनहारो ॥
देव आदि नरभूप ध्यान उनहीं को धारो ।
प्रलय पवन जल नाश भये इनहीं ते सारो ॥
बैताल कहै सुनु बिक्रम सकल लोक जिनते तरत ।
भानु प्रतापी जानकर सो नमस्कार सूर्यहिं करत ॥

३ यश कारण बलि राजा बावनको तिरलोक दिये ।
यशकारण राजाकरण कमठको कछू न शोचा किये ॥
यश कारण हरिचन्द्र नीचघर नारि समर्प्यो ।

यश कारण जगदेव शीश कङ्कालिहि अर्प्यो ॥
यश अजर अमर बैताल भनत जो यशै अमरपद पाइये ।
अश्वपति गजपति नृपति है तो रिसकरि यश न गँवाइये ॥

४ कैमल पत्र दल मूल और जाते फलचर कूं ।
महिक महिक ना गनू जहरकी डली न राकूं ॥
किते मूसरी फार आठ मूठी कर थम्मू ।
नर दम मारूं चरस नाम गोबिन्दका राकूं ॥
सुन सुर तासु न रावरे कभी न सेज सु तुम चढ़ो ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम आठ पहर झूमतरढ़ो ॥

५ बचन तो ऐसे दीजिये कि जैसे दशरथ मान ।
पिता पुत्र दोनों गये बचन न दीन्हों जान ॥
बचन छलो बलिराज बचन कौरव ब्रत खण्डो ।
बचन करन लगे कीश बचन कौरव बन मण्डो ॥
बचन लाग हरिचन्द्र नीचघर नारि समर्प्यो ।
बचन लाग जगदेव शीश कङ्कालिहि अर्प्यो ॥
बाचाबाचं बैताल भनत तो करगहि जिह्वा काढ़िये ।

जरजाय लक्ष बिक्रम तनय तो बोलि बचन मत पलटिये ॥

६ मरै सूम यजमान मरै कटखन्ना टट्टू ।
मरै कर्कशा नारि मरै की खसम निखट्टू ॥
पुत्र वही मरजाय जो कुल में दाग लगावै ।
मित्र वही मरजाय अड़ीपर काम न आवै ॥
बेनियाव राजा मरै सो इनके मरे न रोइये ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम जबै नींदभर सोइये ॥

७ बिनमुख करै अहार कण्ठ बिन राग सुनावै ।
बिन अँग चोला पहर दस्त बिन ताल बजावै ॥
पांचो पण्डा जोर शीश बिन पुरुष कहावै ।
बिन इन्द्री औलाद त्रियाके निकट न जावै ॥
अचरज सुजान बूझो गुणी जाके हाड़ मांस नहिं औरकर ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो कलियुग अन्दर कौन नर ॥

८ एक अंग भुज चार शीश सोलह जो कहिये ।
चार चरण सों चलै नेत्र चौंसठ युग लहिये ॥
द्वै मुख हैं परत्यक्ष चौदह भुवन में छाये ।

तीन लोक में फिरे देव सब पूजन आये ॥
सातद्वीप नवखण्डमें सो आदि अन्त जाको सुयश ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो कहुयोग शृंगार के बीररस ॥

९ सबन पुरुषको भञ्जि भञ्जि करि तिरिया कीनी ।
त्रिया गई जलमाहिं चोह वाकी हरिलीनी ॥
त्रिया से त्रिया भई जब घट पुरुष सँवारे ।
जब वह कुहकी जाय तीर बलद्वीके मारे ॥
ताहि खवावे रस ऊपजै सो और खवाये होत यस ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो कहुयोग शृंगारके बीररस ॥

१० पग तुरंग नहिं तुरी पूँछ ऊंची नहिं कूकर ।
श्याम बरण नहिं रीछ जिमीं खोदत नहिं शूकर ॥
मुख वाको नहिं बोल नहीं केहरि नहिं चीता ।
बिलँगि चढ़े अकाश नहीं नभचर नहिं हीता ॥
जोतोलोबोझकुछहूनहीं जाके हाड़ मांस नहिं और कस ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो कहुयोग शृंगार के बीररस ॥

११ शशि बिनु सूनी रैनि ज्ञान बिन हिरदय सूनो ।

कुल सूनो बिन पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनो ॥
गजसूनो बिनदन्त ललित बिन शायर सूनो ।
बिप्र सून बिन बेद बांस बिन पुहपर सूनो ॥
सूनो रण सावन्त बिन सो घटासून बिनदामिनी ।
बैतालकहै सुनु बिक्रम तो पति बिन सूनी कामिनी

१२ दया चट्टहोगई धर्म धँसिगयो धरणि में ।
पुण्यगई पाताल पाप भयो बरण बरण में ॥
राजा करै न न्याय प्रजाकी होत खुवारी ।
घर घर भये बेपीर दुखित भये नर औ नारी ॥
उलटि दान गजपती शील सन्तोष किते गयो ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो अब कलियुग परगट भयो ॥

१३ नहीं इन्द्र नहिं चन्द्र नहीं तारे तारायण ।
नहिं ब्रह्मा नहिं बिष्णु नहीं नारदनारायण ॥
नहीं राज्य नहिंपाट नहीं धरणीधर अम्बर ।
नहीं अम्ब नहिं खम्ब नहीं भरथरी डिगम्बर ॥
नहिं रावण नहिं राम था तो नहिं इतना बिस्तार था ।

घोड़ा चञ्चल होय सवारै युद्ध जितावै ॥
ये चारों चञ्चल भले सो राजा पण्डित गज तुरी ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो एकनारि चञ्चलबुरी ॥

१७ पहिर झींगले पटा पाग शिर टेढ़ी बांधे ।
घर में तेल न लोन प्रीति चेरी सों सांधे ॥
बातन में गढ़ लेय युद्ध आंखिन नहिं देखै ।
अवघट घट में जाय त्रिया सों लेखा मांगै ॥
जानत है सो जानत सबै दुख सुखसाथी कर्म के ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तौ ये लक्षण नामर्द के ॥

१८ मर्दशीश पर नवै मर्द बोली पहिचानै ।
मर्द खिलावै खाय मर्द चिंता नहिं मानै ॥
मर्द देय औ लेय मर्द को मर्द बचावै ।
गहिरे सँकरे काम मर्द के मर्दै आवै ॥
पुनिमर्द उनहीं को जानिये जो दुख सुख साथी कर्मके ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो ये लक्षण हैं मर्द के ॥

१९ चोर चुप्प कर रहै जो पर घर ढुकै ।

बैताल कहै सुनु बिक्रम एक अधाधुंध गुब्बार था ॥
१४ दिये नौसौ हाथी नौ तुरंग पचास गयंदन ।
दिये सौ सुन्दर सौ पद्मिनी कि दिय भाट निरंजन ॥
दिये केसर कस्तूरी कि दिये मलयागिरि चन्दन ।
दिये चँवरचीर नग हीर लालमाणिक जड़खम्भन ॥
सकल सभा के राव तुम सो मन बिचार चित्तैधरो ।
बैतालकहै सुनु बिक्रम तो छप्पन करोड़ कागद चढ़ो
१५ दबकर पढ़ै कबित्त पास मोची तुक जोरै ।
मल्हा पढ़ै कबित्त नाव गहिरे में बोरै ॥
भुजवा पढ़ै कबित्त जीव दशबीस जरावै ।
धोबी पढ़ै कबित्त छानकर कलप चढ़ावै ॥
कुछ कुछ कबित्त नाऊ पढ़ै सो बार मूड़ि आगे धरै ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो अब कबित्त सब नरपढ़ै ॥
१६ हाथी चञ्चल होय झपट मैदान देखावै ।
राजा चञ्चल होय मुल्क को सर करलावै ॥
पण्डित चञ्चल होय सभा उत्तर दै आवै ।

घोड़ा चञ्चल होय सवारै युद्ध जितावै ॥
ये चारों चञ्चल भले सो राजा पण्डित गज तुरी ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो एकनारि चञ्चलबुरी ॥
१७ पहिर झींगले पटा पाग शिर टेढ़ी बांधे ।
घर में तेल न लोन प्रीति चेरी सों सांधे ॥
बातन में गढ़ लेय युद्ध आंखिन नहिं देखै ।
अवघट घट में जाय त्रिया सों लेखा मांगै ॥
जानत है सो जानत सबै दुख सुखसाथी कर्म के ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो ये लक्षण नामर्द के ॥
१८ मर्दशीश पर नवै मर्द बोली पहिचानै ।
मर्द खिलावै खाय मर्द चिंता नहिं मानै ॥
मर्द देय औ लेय मर्द को मर्द बचावै ।
गहिरे सँकरे काम मर्द के मर्दै आवै ॥
पुनिमर्द उनहीं को जानिये जो दुख सुखसाथी कर्मके ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो ये लक्षण हैं मर्द के ॥
१९ चोर चुप्प कर रहै जो पर घर ढुकै ।

जोरू चुपकर रहै पिया बिन बोल न सकै ॥
चेरी चुपकर रहै शील साहब को मानै ।
गूँगा चुपकर रहै बात एकौ नाहिं जानै ॥
वृक्ष और जल जीव सब पवन साथ उड़ते रहैं ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो कोइ कोइ कबि कुछकुछ कहैं ॥

२० चुपक रहै कोइ चोर रैनि अँधियारी पाये ।
संत चुप्प ह्वै रहै मढ़ी में ध्यान लगाये ॥
बधिक चुप्प ह्वै रहै फाँसि पक्षी लैआवै ।
छैल चुप्प ह्वै रहै सेज पर तिरिया पावै ॥
पीपल पात हस्ती श्रवण कोइ कोइ कबि कुछकुछ कहैं ।
बैताल कहै सुनु बिक्रम चतुर चुप्प कैसे रहैं ॥

२१ अवध छाँड़ि सियराम जाय बनखण्ड पहूँच्यो ।
सियाहरी दशशीश युद्ध रावण से माच्यो ॥
लड़े एक से एक लषण शकती जो पछाड़े ।
पवनपुत्र बलवान द्रोणागिरि पर्बत्त उखाड़े ॥
बांध्यो समुद्र फनगर्ज नेक लहर ऊपर चढ़ो ।

बैताल कहै सुनु बिक्रम तो दिनहीं मध्ध गिरि पैचढ़ो॥
२ रण में जूझै शूर टका पर जान गँवावै।
दाता दे जिनज्ञात आप भिक्षुक है जावै॥
लोभी अति बुधिवान बैठ अपने घर खावै।
कादर रहै गुनवान सदा वे प्राण बचावै॥
बैताल कहै सुनु बिक्रम तो दाता सुरमा ना भले।
लोभी कादरहैं भले जिन युद्ध पुण्य दोऊदले॥

भुजबर्णन कबित्त॥

कर करिवर किमि सुन्दर सुढार महा गोल लोल
ाये चारु चंपक बरन हैं। शाखा कल्पद्रुम सम युग
ति दामिनीसी हनूमान माखन की संयुता हरन हैं॥
ड़ भुजबन्द चूड़ा बलयादि भूषित ज्यों देखि देखि दुर
रदन्त निदरन हैं। नाह गलमाहँ कञ्ज सहित मृणाल
ज प्यारी तो बिशाल शाल सौतिके करन हैं॥ १॥

अथ पानबर्णन कबित्त॥

कलप लताके पता कोटि सूरकी सी कांति पूर्ण चंद्रमा

की द्युति दीपति निदान हैं । दरपण माहिं कछु दरपन देखियतु क्षिति रुचि की ज्यों छटा छाजत महान हैं ॥ हनुमान प्रीति की सों कंज शुभ रेखा युत अद्भुत हरि हरे शारदसकान है । प्यारी तेरे पान की बड़ाई गाई बेदचारि सो तैं परी पाई कौन जोर खड़ी पान है ॥ २ ॥

अथ अंगुली बर्णन कबित्त ॥

गोरीगोरी अंगुली हैं अंगना तिहारी प्यारी लघुमाधि दीरघ सुक्षम थूलकर की । नखनकी द्युति कबि जीव सो उदित शोभा हनूमान कैधौं हैं मयूषैं कलाधर की ॥ दश चक्र चिह्न दश दिशि जीत्यो बीसो बीस कली कश्मीर की धौं फली चामीकर की । शक्ति पंच देवन की भारती है लेखनी की पंच पंचगांसी हैं प्रपंची पंचशर की ॥ ३ ॥

अथ मिंहँदी बर्णन कबित्त ॥

छला छाप मुंदरी बिराजै करकंज तामें मिंहँदी के बुन्दन की बृन्द उपमानी है । कै धौं लिखै यन्त्र मन्त्र मोहन के हनूमान बैठो भौम चन्द भौन

संकुलित जानी है ॥ कलधौत पत्र गोये बाघन बसन भौन इंदिरा के आई इन्द्रबधू मोद मानी है । दई है बिचित्र चित्र कीनो चित्रा चित्रनी के देखि चित्र नीके चित्त लालको लुभानी है ॥ ४ ॥

अथ कुच बर्णन कबित्त ॥

कंचनके घट नट बटहू युगुलमठ कमठ कठोर अरु सुभट मनोजके । शुकप्रिय श्रीफल लंगूर कोक संपुट त्यों उलटे नगारे ज्यों मंजीरकेत चोटके ॥ तम्बु कम्बु शम्बु कर कुम्भरूप छत्रपती कबि हनुमान कहै शिखर सरोजके । ओज भरे मौज भरे रोज सुख दायी श्याम येतो उपमा अधीन सुन्दरि उरोजके ॥ ५ ॥

अथ कुचअग्रश्यामताई बर्णन कबित्त ॥

कैधौं पिये कालकूट बैठे शम्भु जटाजूट निशिके नलिनपै अलिनबास लीन्हों है । चामीकर कुम्भनपै मर्कत कठोर धरै रतिरन बीर युग टोप शिर दीन्हों है ॥ प्यारी कुच श्यामताकी डीठि गड़ी श्याम ताकी कहै हनूमान इन

काहूको न चीन्हों है। तपिन के तप जीते जपिन के जप जीते तातें चतुरानन बदन कारो कीन्हों है ॥ ६ ॥

अथ कुचनकी सन्धि बर्णन कवित्त ॥

कैधौं निशिशोक कोक जुरि बैठे बांसर में गदगद कण्ठ कै कहत रबिचोरी है। आवत अतन नित याहीमग हनूमान रति को करत मन आनँद अकोरी है॥ कै धौं दोऊ गिरि एक ठौर ह्वै करत मिस हठको चलत जग नैन यहि ओरी है। निफक्क अलक्ख त्यों लखै ना कोऊ कुच सन्धि बिरची बिरञ्चि ज्यों जुराफन की जोरी है ॥ ७ ॥

मन क्रम बचन के टेरो नाथ पाण्डु बधू अन्धसुत लेत लाज भूपन की सनकी। हनूमान ततक्षण धाइकै सहाइ कीनी कासि कासि मोटै लीन्हीं सांवरे जैसेनकी॥ भीषम करण द्रोण आदि सभा चकित ह्वै चिन्तामणि आनि मानि आंगुरी दशनकी। ऊतरी उतारे नाहिं ऊतरी दुशाशन की पूतरी द्रुपद भई पूतरी बसन की ॥ ८ ॥

॥ इति ॥